(1)

This Booklet

is Published in Memory of

My Beloved Grandfather

Late Shri Justice J.P. Jain

GAURAV JAIN
Advocate
R-3, Tilak Marg
C-Scheme, JAIPUR-302 005
Phone : 0141-2222519

Late Shri Justice J.P. JAIN

15-11-1917 — 17-9-1975

प्राक्कथन

माननीय न्यायमूर्ति श्री एन.के. जैन ने जैन दर्शन, साहित्य व ग्रन्थों में वर्णित आचार्यों द्वारा स्पष्ट विवेचन के आधार पर अपना लेख 'समाधिमरण' (संथारा/सल्लेखना) जागरुकता के प्रयास में लिखा।

यह सही है कि जो भी जीव पैदा होता है, वह मृत्यु को अवश्य प्राप्त होता है। मनुष्य को राग-द्वेष से दूर रहकर अपने कर्म करने चाहिएं। शास्त्रों में भी कहा गया है कि अपने किये गये कर्मों के अनुसार फल भोगना पड़ता है व मृत्यु पर अगली योनि कर्मों के अनुसार ही प्राप्त करता है।

अगला जन्म कैसे मिलता है, मुझे नहीं मालूम तथा समाधिमरण पर मोक्ष मिलता है या नहीं, इससे भी मैं अनभिज्ञ हूँ। परन्तु अनादिकाल से जैन दर्शन व जैनेतर धर्म में इसका विधान व प्रक्रिया विधिपूर्वक विस्तार से दर्शाई गई है, जो जीवन सुधार की एक कुंजी है एवं आत्मकल्याण में सहायक है।

परम पूज्य आचार्य 108 श्री विद्यानन्द जी ने न्यायमूर्ति श्री एन.के. जैन का लेख पढ़ा। इसकी विवेचना में महाराज श्री के उद्‌गार हैं कि ''**मरण मंगलमय हो**'' साथ में बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद भी दिया, जिससे परम आनन्द व सुख की अनुभूति हुई। परम पूज्य आचार्य श्री का आशीर्वाद सभी को प्राप्त हो, इसी मंगल कामना व भाव के साथ न्यायमूर्ति श्री एन.के. जैन साहब का यह लेख महाराज श्री के आशीर्वाद के साथ अपने दादा न्यायमूर्ति स्व. जे.पी. जैन की स्मृति की निरन्तरता बनाये रखने के क्रम में परम पूज्य महाराज श्री के चरणों में सादर नमन करते हुए प्रकाशित करा रहा हूँ, जिससे सभी को महाराज श्री का **आशीर्वाद** प्राप्त हो।

–गौरव जैन

एडवोकेट, राजस्थान हाईकोर्ट, जयपुर, आर-3, तिलक मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर-302 005

मरण मंगलमय हो

आचार्य विद्यानन्द मुनि

सल्लेखना जैनदर्शन का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय है। इसे समझना अत्यन्त आवश्यक है। यह जीवन को सुधारने की एक उत्तम कला है। परन्तु यह विषय सूक्ष्म भी बहुत है, अतः इसमें सावधानी की भी अत्यन्त आवश्यकता है। वर्तमान में कुछ लोग इसे ठीक से न समझ पाने के कारण ही यद्वा-तद्वा बातें करते देखे जाते हैं। शास्त्रों में स्पष्टतः 'निष्प्रतीकारे' शब्द आया है जिसका तात्पर्य है कि जीवनयापन हेतु बहुत उपचार करो, खूब जीओ, परन्तु जब जीना असम्भव ही हो जाए, मरण अनिवार्य ही हो जाए, तब शरीर का मोह त्यागकर मरण को प्रस्तुत हो जाना सल्लेखना है। आचार्य समन्तभद्र का वह कथन मूलतः इस प्रकार है–

''उपसर्गे दुर्भिक्षे जरसि रुजायां च निष्प्रतीकारे।
धर्माय तनुविमोचनमाहुः सल्लेखनामार्याः॥'' –रत्नकरण्ड

इसके अतिरिक्त उन्होंने आगे एक और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वाक्य का प्रयोग किया है–**'सकलदर्शिनः स्तुवते'** जिसका अभिप्राय है कि संसार के सभी दर्शन सल्लेखना को चाहते हैं, उसकी प्रशंसा करते हैं। संसार में ऐसा कोई दर्शन नहीं जो सल्लेखना अर्थात् शान्तिपूर्वक मरण को पसन्द न करता हो। चींटी से लेकर चक्रवर्ती तक सभी शान्ति से मरना पसन्द करते हैं।

महाकवि कालिदास ने भी लिखा है कि प्राचीन काल में अच्छे घराने के सभी लोग अन्त में समाधियोगपूर्वक मरण करते थे–

''शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्धक्ये मुनिवृत्तीनां योगेनान्तेन तनुज्याम्॥'' –रघुवंश

मनुष्य के जीवन में चार प्रमुख उत्सव माने गये हैं– जन्मोत्सव, विवाह-महोत्सव, दीक्षा-महोत्सव और मृत्यु-महोत्सव। ये चारों उत्तरोत्तर दुर्लभ हैं। पहला प्रायः सभी के होता है, दूसरा (आदर्श गृहस्थ होना) कुछ बड़ी बात है, तीसरा विशिष्ट भाग्योदय से किसी-किसी के जीवन में होता है, परन्तु चौथा तो और भी महादुर्लभ किसी विरले जीव के ही होता है, परन्तु जीवन को पूर्ण सार्थकता इसी से प्राप्त होती है। जिस प्रकार सीमा पर देशरक्षा करते हुए छाती पर गोली खाने वाले को शहीद कहते हैं, उसी प्रकार धर्मध्यानपूर्वक शरीर छोड़ना समाधिमरण कहलाता है।

'तत्त्वार्थसूत्र' में यह भी कहा है कि– 'सुखदुखजीवितमरणोपग्रहाश्च' अर्थात् मरण भी उपकारी है, उसे भी मंगल बनाया जा सकता है।

इसी सल्लेखना पर न्यायमूर्ति श्री एन.के. जैन ने एक सुन्दर पुस्तक लिखी है। उन्हें मेरा बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद है।

शुभाशीर्वाद

आचार्य विद्यानंद

4-10-2006

JUSTICE V. JAGANNATHAN
JUDGE

High Court of Karnataka,
Bangalore-560 001

Date : 15.04.2005

Preface

It is very heartening to note that Shri Gaurav Jain, Advocate is publishing the articles written by his illustrious father Shri Justice N.K. Jain, presently the Chairman of the State Human Rights Commission, Himachal Pradesh and former Chief Justice of Karnataka High Court.

The publication of the articles, I am given to understand, is to perpetuate the memory of his grand father Late Justice J.P. Jain, Judge, Raj. High Court, Jodhpur. Shri Gaurav Jain could not have thought of any other way to perpetuate the memory of his grand father and I heartly congratulate Shri Gaurav Jain for his noble venture.

I hope that the book containing the articles authored by Shri Justice N.K. Jain will be of great help not only to the young students, but also for the budding lawyers and all those who are greatly interested in knowing more about the subjects contained in the articles.

I once again wish Shri Gaurav Jain all success in his maiden venture and by publishing the book and series of Book in future, Shri Gaurav Jain has also ensured a permanent place for him in the world of legal literature.

V Jagannathan

–Justice V. Jagannathan